संतुष्टता से ही सम्पन्नता

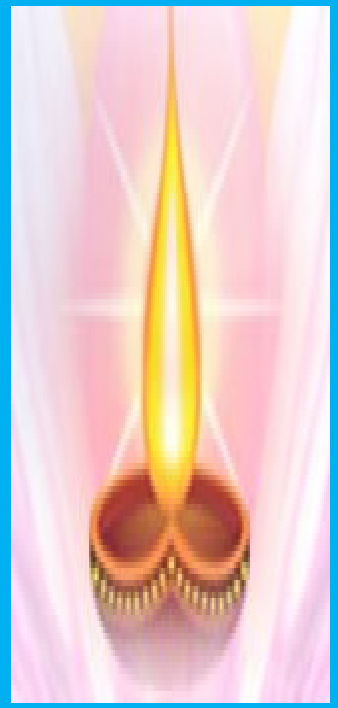

ब्रह्माकुमारिझ

प्रस्तुति

ब्र. कु. प्रफुलचन्द्र

मानव जीवन में संतुष्टता के गुण का महत्व

- 'संतुष्टि' वा 'संतुष्टता' एक बड़ा ही प्यारा और आनंदित करने वाला शब्द है।
- संतुष्टि मस्तिष्क की उस अवस्था को दर्शाता है, जब भीतर से खुशी होती है और लगने लगता है - ऑल इज वेल।
- वर्तमान और निकट भविष्य सुखद प्रतीत होने लगता है।
- सुख और शांति की अनुभूति का आधार ही संतुष्टता में समाया हुआ है|

मानव जीवन में संतुष्टता ही परोपकारी है

सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते
शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति |
कन्दैः फलैर्मुनिवराः क्षपयन्ति कालं
संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ||

भावार्थ-

सर्प हवा खाकर भी दुर्बल नहि होते,
वनके हाथी सुखा घास खाके भी बलवान होते है,
मुनियो कंदमूल खाकर काल व्यतीत करते है,
वैसे मनुष्यो के लिए संतोष हि परोपकारी है।

उपनिषद्

किन किन बातों में हमें संतुष्टता रहना है

- अपने आप से यानि स्वयं से संतुष्ट
- विशेष रूप से साथी ब्राह्मण आत्माओ से संतुष्ट
- विश्व की अन्य सम्बंधित आत्माओ से संतुष्ट
- जड़ एवं जिव सृष्टि से यानि प्रकृति से संतुष्ट
- अन्य सभी बातों से एवं परिस्थितीओं से भी संतुष्ट

संतुष्टमणि बन हमें औरो को भी संतुष्ट करना है

- संपर्क सम्बन्ध में आने वाली हर आत्मा को हमें संतुष्ट करना है|
- विशेष रूप से ब्राह्मण एवं सेवा साथी आत्माओ को संतुष्ट करना है|
- हर आत्मा हम से संतुष्ट रहे एसा पुरुषार्थ करना है|
- सर्व आत्माओं की संतुष्टता का आशीर्वाद व सूक्ष्म स्नेह तथा सहयोग प्राप्त करना है|
- सर्व आत्माओ द्वारा संतुष्टमणि का सर्टिफिकेट प्राप्त हो|

संतुष्टता ही सम्पन्नता और सम्पूर्णता की निशानी है

- सबसे बड़े ते बड़ा गुण कहो या विशेषता कहो या श्रेष्टता कहो वह संतुष्टता ही है |
- यदि संतुष्ट नहीं है तो उसका प्रभाव सेवा पर भी पड़ेगा सर्विस रुक जायेगी
- सदा स्वयं से और सर्व से संतुष्ट आत्मा ही अनेक आत्माओं का इष्ट बन सकती है वह अष्ट देवता बन सकती है|
- संतुष्ट आत्मा ही प्रभु प्रिय, लोक प्रिय और स्वयं प्रिय होती है ऐसी संतुष्ट आत्मा ही वरदानी रुपमे प्रसिध्ध होती है| १६-१-७७
- संतुष्टता से ही प्रसन्नता और प्रशंशा की प्राप्ति होती है २९-११-७८
- ज्ञान स्वरूप स्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण है संतुष्टता| संतुष्टता बेफिक्र बादशाह बनाती है |
- संतुष्टता स्वमान की सीट पर सेट रहने का साधन है और महादानी, वरदानी, विश्वकल्याणी सदा और सहज बनाती है|

- हद के तेरे मेरे के चक्र से मुक्त कराये स्वदर्शन चक्रधारी बनाती है
- संतुष्टता बापदादा के दिलतक्त नशीन, सहज स्मृति के तिलकधारी, सेवा के ताजधारी बनाती है | ब्राह्मण जीवन का जीयदान है संतुष्टता | १२-३-८४
- सदा संतुष्ट हो? कभी स्वयं से असंतुष्ट, कभी वायु मंडल के प्रभाव से असंतुष्ट कभी ब्राह्मणों से असंतुष्ट कभी संस्कारों से असंतुष्ट तो नहीं होते हो ना?
- संतुष्ट आत्माओं को सभी का प्यार मिलता है |
- संतुष्टता ब्राह्मण जीवन का विशेष गुण कहो या खजाना कहो या विशेष जीवन का श्रृंगार है, जीवन परिवर्तन का दर्पण है |
- जो संतुष्ट रहेगा उसके प्रप्ति सभीका स्नेह रहेगा | संतुष्टता सफलता का आधार है | उसके आगे माया सरेंडर हो जायेगी | १८-३-८५
- संतुष्ट मणियाँ ही बाप दादा के गले का हार बनती है, राज्य अधिकारी बनती है और भक्तो के सुमिरन की माला बनती है | १५-१०-८७

सर्व को संतुष्ट करने का साधन और विधि कौनसी है?

- हर व्यक्ति के प्रति हमारी शुभ भावना, शुभ कामना हो| उसका उमंग, उत्साह बना रहे ऐसा उसको सहयोग दे और प्रेरित करे|
- अन्य को संतुष्ट रखने के लिए उनकी इच्छाओं को, अपेक्षाओं को और विशेष रूप भावनाओं को समज लेना अत्यंत आवश्यक है.
- जैसा समय, जैसी परिस्थिति, जिस प्रकार की आत्मा सामने हो वैसा अपने को मोल्ड कर सके|
- अपने स्वभाव संस्कार को समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण परिवर्तन कर शके|
- अहंकार से और मान-सन्मान से दूर रहे अपनी वाणी में और व्यवहार में सत्यता और मधुरता बनी रहे|

ॐ शांति

Thanks to Baba & All of You